26-July-09

- Review माहेश्वर सूत्राणि
- प्रत्याहार expansion to its constituent members
- Place of pronunciation – आस्य or स्थान
- Part used for pronouncing – करण
- प्रयत्न – The effort in pronouncing
- अयोगवाहाः – अनुस्वार , विसर्ग (विसर्जनीय), जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, यम

  These are the letters of phonetic elements which are always uttered only in combination with another phonetic element or letter and never independently

Going beyond pratyaharas while using them to name sets of letters

गुण

अदेङ् गुणः । १.१.२

अत् एङ् गुणः means गुण is a name for अत् + एङ्

गुण = अ (ह्रस्व अकार), ए, ओ

वृद्धि

वृद्धिरादैच् । १.१.१

वृद्धिः आत् ऐच् means वृद्धिः is a name for आत् + ऐच्

वृद्धिः = आ (दिर्घ only) , ऐ, औ

Figuring the correct letters based on आस्य (Place of pronouncing) and प्रयत्न (effort)

	Corresp. गुण अ, ए, ओ	Corresp. वृद्धि आ,ऐ, औ
अ	अ	आ
इ	ए	ऐ
उ	ओ	औ
ऋ	अ (based on अज् भक्ति)	आ (based on अज् भक्ति)
ऌ	अ (based on अज् भक्ति)	आ (based on अज् भक्ति)

A rule – If ऋ or ऌ are replaced by अण्, then such an अण् will be an अण् immediately followed by रँ (= र्, ल्)

Based on हल् भक्ति – ऋ -> र्, ऌ -> ल्

Applying the above rule:

	Corresp. गुण	Corresp. वृद्धि
अ	अ	आ
इ	ए	ऐ
उ	ओ	औ
ऋ	अर् (based on अज् भक्ति)	आर् (based on अज् भक्ति)
ऌ	अल् (based on अज् भक्ति)	आल् (based on अज् भक्ति)

इक्	Corresp. यण् (य्, व्, र्, ल्)
इ	य्
उ	व्
ऋ	र्
ऌ	ल्

इको यणचि ॥ = इकः (६/१) यण् (१/१) अचि (७/१)

गौरी (ई) + अवति = गौर्य् अवति = गौर्यवति

हिम + अग्नि =

अकः सवर्णे दीर्घः – तुल्य आस्य प्रयत्नम् सवर्णम्

संप्रसारणम्

य्. व्, र्, ल् coming as replacement for इ उ ऋ ऌ
The process f this replacement is also called
संप्रसारणम्

यण् -> इक्

Home work:

झल् -> जश्
झल् -> खर्

क्लैब्यम् - Example of noun with first vowel being a vrddhi letter (can be an indicator of a taddhita word). Find other such words in Gita Verses.

In 1st gana find:
धातु ending in इक्
धातु with penultimate short इक्
धातु with penultimate short अ
(Penultimate means the character before the last one)